86

''मैं यीशु को ज़्या करूं?''

बाइबल पाठ #37

VII. यीशु की सेवकाई का अन्तिम सप्ताह (क्रमश:)।

ज. शुक्रवार: यीशु की मृत्यु का दिन (क्रमश:)।

5. पतरस द्वारा इनकार करना (मत्ती 26:58, 69-75; मरकुस 14:54, 66-72; लूका 22:54ख-62; यूहन्ना 18:15-18, 25-27)।
6. यहूदी ''मुकदमा'' (चरण तीन): महासभा द्वारा दण्ड (मत्ती 27:1, 2; मरकुस 15:1; लूका 22:66-23:1; यूहन्ना 18:28)।
7. रोमी मुकदमा:
   क. चरण एक: पिलातुस के सामने (निर्दोष पाया गया) (मत्ती 27:11-14; मरकुस 15:2-5; लूका 23:2-7; यूहन्ना 18:28-38)।

परिचय

इस पाठ में,[1] हम यीशु के मुकदमों का अध्ययन जारी रखेंगे। पिलातुस के सामने मसीह के मुकदमे के दौरान, उस राज्यपाल ने भीड़ से पूछा था कि मैं ''... यीशु को जो मसीह कहलाता है, क्या करूं?'' (मत्ती 27:22)। यह प्रश्न आज भी उतना ही प्रासंगिक है, जितना पहली बार पूछे जाने के समय था। हर किसी के लिए, जो यीशु के बारे में सीखता है इस प्रश्न का उत्तर देना आवश्यक है।

हम पहले ही देख चुके हैं कि कुछ लोगों ने इस प्रश्न का उत्तर कैसे दिया था। उदाहरण के लिए यहूदा के कहने का अर्थ था कि ''मैं उसे बेच दूंगा!'' आज भी कुछ लोग प्रसिद्धि, सुख या सम्पत्ति जैसे स्वार्थी लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए प्रभु को ''बेचने'' के आरोपी हैं।[2] कुछ लोगों ने उसे चांदी के तीस सिक्कों से भी कम में ''बेच दिया'' है!

यीशु के मुकदमों की समीक्षा जारी रखते हुए, मैं बीच-बीच में बताता रहूंगा कि दूसरों ने ''मैं यीशु को क्या करूं?'' प्रश्न का उत्तर कैसे दिया। मेरा उद्देश्य प्रत्येक व्यक्ति को यह पूछने की चुनौती देना है कि ''मैंने प्रभु के साथ क्या किया है?''

पतरस का इनकार (मत्ती 26:56-58, 69-75; मरकुस 14:54, 66-72; लूका 22:54-62; यूहन्ना 18:15-18, 25-27)

पिछले पाठ में, हमने बाग में यीशु की प्रार्थनाओं, उसकी गिरफ्तारी और यहूदी ''मुकदमे'' के आरम्भिक चरणों का अध्ययन किया था। इस पाठ के आरम्भ में, हमें यीशु की गिरफ्तारी के समय में वापस जाना चाहिए।

मसीह की गिरफ्तारी के बाद ''सब चेले उसे छोड़कर भाग गए'' (मत्ती 26:56)। परन्तु जब वे यीशु को ले जा रहे थे, तो पतरस और यूहन्ना[3] उसके और उसके पकड़ने वालों के पीछे-पीछे महायाजक के घर तक कुछ दूरी से[4] चलते रहे (मरकुस 14:54; यूहन्ना 18:15; लूका 22:54)। यूहन्ना, जो महायाजक के घर वालों का परिचित था,[5] को आंगन में प्रवेश करने की अनुमति मिल गई (यूहन्ना 18:15)। यह आंगन महासभा के इकट्ठे होने के स्थान से नीचे था (देखें मरकुस 14:65, 66)। यूहन्ना के कारण पतरस को भी अन्दर आने दिया गया था (देखें यूहन्ना 18:16, 17)।[6]

सर्दी भगाने के लिए आंगन में कोयलों की आग जलाई गई थी (यूहन्ना 18:18; लूका 22:55)। पतरस यीशु की गिरफ्तारी का ''अंत देखने को'' (मत्ती 26:58) आग के पास ऐसे बैठ गया[7] जैसे वह उन्हीं में से एक हो। आग सेंक रहे लोगों में कुछ ''प्यादे'' (मरकुस 14:54; यूहन्ना 18:18) थे, जिन्होंने उसके प्रभु को गिरफ्तार किया था।

पहले शाम को, यीशु ने भविष्यवाणी की थी कि उसके चेले उसे छोड़ जाएंगे (मत्ती 26:31)। इस पर पतरस ने विरोध किया था, ''यदि सब तेरे विषय में ठोकर खाएं तो खाएं, परन्तु मैं कभी भी ठोकर न खाऊंगा'' (मत्ती 26:33)। प्रभु ने उसे अफसोस के साथ बताया था, ''मैं तुझ से सच कहता हूं, कि आज ही रात को मुर्गे के बांग देने से पहिले,[8] तू तीन बार मुझ से मुकर जाएगा'' (मत्ती 26:34)।

पहला इनकार अधिक देर बाद नहीं होना था।[9] वह दासी जिसने पतरस को अन्दर आने दिया था, उसके पास आकर कहने लगी, ''क्या तू भी इस मनुष्य के चेलों में से है?'' (यूहन्ना 18:17क)। उसे यह शक इसलिए हुआ, क्योंकि वह यूहन्ना के साथ था। पतरस ने तुरन्त उत्तर दिया, ''मैं नहीं हूं'' (यूहन्ना 18:17ख), परन्तु इससे वह स्त्री संतुष्ट नहीं हुई। ''उसकी ओर ताककर'' (लूका 22:56क) उसने आग के पास बैठे लोगों को बताया, ''यह व्यक्ति भी तो उसके साथ था'' (लूका 22:56ख)। उसने प्रेरित से कहा, ''तू भी तो उस नासरी यीशु के साथ था'' (मरकुस 14:67; देखें मत्ती 26:69)। पर ''उस ने सब के सामने यह कहकर इनकार किया'' (मत्ती 26:70) कि ''मैं उसे नहीं जानता''; ''मैं न ही जानता और न ही समझता हूं कि तू क्या कह रही है'' (लूका 22:57; मरकुस 14:68)।

यह प्रेरित फुर्ती से आग के पास से उठकर फाटक की ओर चला गया (मत्ती 26:71), जहां वह ड्योढ़ी के नीचे खड़ा हो सके[10] (मरकुस 14:68)।[11] परन्तु वह महिला उसके पीछे-पीछे चली गई और पास खड़े लोगों को बताने लगी, ''यह उनमें से एक है'' (मरकुस 14:69)। एक और दासी ने उसकी हां में हां मिलाई: ''यह भी तो यीशु

नासरी के साथ था'' (मत्ती 26:71; देखें लूका 22:58क)। ''उसने शपथ खाकर फिर इनकार किया[12] कि मैं उस मनुष्य को नहीं जानता'' (मत्ती 26:72; देखें लूका 22:58ख)। यह उसका दूसरा इनकार था।

हमें रुककर यह पूछना चाहिए कि ''पतरस ने यीशु का इनकार क्यों किया?'' यह मछुआरा आसानी से नहीं डरा था। उसने बाग में अपनी बहादुरी साबित की थी। आंगन में आकर उसने साहस (या कम से कम दुस्साहस) दिखाया था, जहां उसने यीशु के शत्रुओं से घिर जाना था। हम इस प्रश्न का उत्तर स्पष्ट नहीं दे सकते, पर इस पर विचार करें: पतरस उलझन में पड़ गया था; उसे शक भी हो रहा हो सकता है। किसी कारण, यह विचार कि यीशु गिरफ्तार हो सकता है, उस पर मुकदमा हो सकता है और वह मर सकता है, मसीहा की उसकी पूर्वधारणा से मेल नहीं खाता था (मत्ती 16:22)। दूसरा कारण, उसे समझ नहीं आई होगी कि उसके प्रभु ने उसे तलवार चलाने की अनुमति क्यों नहीं दी थी (मत्ती 26:52)। आंगन में आने पर दृढ़ इरादे वाला यह आदमी असुरक्षित, बहुत ही असुरक्षित था।[13]

इस प्रेरित को अकेला हुए एक घण्टा बीत गया था, पर फिर ''एक और मनुष्य दृढ़ता से कहने लगा, निश्चय ही यह भी तो उसके साथ था; क्योंकि यह गलीली है। पतरस ने कहा, हे मनुष्य, मैं नहीं जानता कि तू क्या कहता है?'' (लूका 22:59, 60क)। पास खड़े कुछ लोग भी उसके साथ कहने लगे, ''सचमुच तू भी उनमें से एक है; क्योंकि तेरी बोली तेरा भेद खोल देती है'' (मत्ती 26:73)। गलीलियों की बोली दूसरों से अलग थी। अपने अस्पष्ट उच्चारण के अलावा, वे कई अक्षर एक जैसे ही बोलते थे और कई अक्षर खा जाते थे। भीड़ में मलखुस का एक रिश्तेदार था (देखें यूहन्ना 18:10)। उसने कहा, ''क्या मैं ने तुझे उसके साथ बारी में न देखा था?'' (यूहन्ना 18:26)। पतरस ''धिक्कार देने और शपथ खाने लगा कि मैं उस मनुष्य को नहीं जानता'' (मत्ती 26:74क)। यह उसका तीसरा इनकार था।

''वह कह ही रहा था कि तुरन्त मुर्ग़ ने बांग दी''[14] (लूका 22:60ख; देखें मत्ती 26:47ख; यूहन्ना 18:27ख)– से यीशु ने भविष्यवाणी की थी। उसी समय, ''प्रभु ने घूमकर पतरस की ओर देखा'' (लूका 22:61क)। हो सकता है कि यीशु ने खिड़की से नीचे देखा हो। शायद एक से दूसरी जगह ले जाते समय या उसने आंगन में से गुज़रते हुए प्रेरित को पीछे टकटकी लगाकर देखा हो। क्या आप प्रभु के देखने की कल्पना कर सकते हैं? उस देखने में कितनी भावनाएं होंगी: शोक, डांट ... पर प्रेम भी, क्योंकि प्रेम तो होता ही है! जब यीशु ने पतरस की ओर देखा, तो इस प्रेरित को ''प्रभु की वह बात याद आई जो उस ने कही थी कि आज मुर्ग़े के बांग देने से पहिले,[15] तू तीन बार मेरा इनकार करेगा और वह बाहर निकलकर फूट-फूट कर रोने लगा'' (लूका 22:61क, 62)। हालात की मारी उसकी गालों से आंसू गिरने लगे।

''मैं यीशु को क्या करूं?'' प्रश्न का उत्तर क्या हमने कभी दिया है कि ''मैं उसका इनकार करूंगा''? क्या हम वहां बेचैन हुए हैं जहां प्रभु और उसके वचन के लिए खड़े होने के बजाय शांत रहना आसान और सुरक्षित था।[16] यह न सोचें कि ऐसा कभी नहीं हो सकता; यदि पतरस गिर सकता था तो हम भी गिर सकते हैं (देखें 1 कुरिन्थियों 10:12)।

परन्तु पतरस की कहानी यह भी ऐलान करती है कि असफलता अंत नहीं है। इस पर हम अगले पाठ में बात करेंगे।

महासभा का दोष लगाना (मत्ती 27:1, 2; मरकुस 15:1; लूका 22:66-23:1)

आइए अब यीशु के मुकदमों के विवरण पर लौटते हैं। ऐसा करते हुए हमें ''मैं यीशु को क्या करूं?'' प्रश्न का एक और उत्तर मिलता है। महासभा के कहने का अर्थ था कि ''हम उस पर दोष लगाएंगे!''

कायफ़ा के घर में रात को महासभा की बैठक अवैध नहीं, तो अनियमित अवश्य थी।[17] अगले दिन सुबह-सुबह (देखें मरकुस 15:1क; लूका 22:66) यीशु को एक ''आधिकारिक'' सभा के लिए सभा कक्ष में ले जाया गया था[18] (लूका 22:66)।

सभा के सदस्यों[19] का दोहरा उद्देश्य था। पहले तो उन्हें रात में पास किए गए दण्ड की औपचारिक पुष्टि करनी आवश्यक थी। उन्होंने यीशु से फिर पूछा, ''यदि तू मसीह है, तो हम से कह दे!'' (लूका 22:67क; देखें मत्ती 26:63)। उसने उत्तर दिया, ''यदि मैं तुम से कहूं, तो प्रतीति न करोगे। और यदि पूछूं, तो उत्तर न दोगे''[20] (लूका 22:67ख; 68)। LB का अनुवाद है ''... तुम मुझ पर विश्वास नहीं करोगे अर्थात मुझे अपनी नहीं कहने दोगो।'' परन्तु इसके बाद यीशु ने अपने लिए मसीहा के शीर्षक का इस्तेमाल करते हुए स्वयं को ''मनुष्य का पुत्र'' (लूका 22:69) कहा।[21] सभा के सदस्य यीशु के इस दावे पर भड़क उठे: ''तो क्या तू परमेश्वर का पुत्र है?'' (लूका 22:70क)। उसने उत्तर दिया, ''तुम आप ही कहते हो,[22] क्योंकि मैं हूं'' (लूका 22:70ख)। खुश होकर, वे कहने लगे, ''अब हमें गवाही का क्या प्रयोजन है;[23] क्योंकि हम ने आप ही उसके मुंह से सुन लिया है'' (लूका 22:71)।

एक दूसरा मसला भी सुलझाया जाना आवश्यक था।[24] उन्होंने यीशु को परमेश्वर की निंदा का आरोप लगाकर मृत्यु दण्ड दिया था (मत्ती 26:65, 66), पर कानूनी तौर पर वे स्वयं उसे दण्ड नहीं दे सकते थे (यूहन्ना 18:31)।[25] क्योंकि रोमी राज्यपाल को परमेश्वर की निंदा के धार्मिक आरोप से कुछ लेना-देना नहीं था, इसलिए उन्हें राजनैतिक आरोप गढ़ना आवश्यक था, जिससे वे अधिकारियों को प्रभावित कर सकते। ऐसा करने के बाद (देखें लूका 23:2), ''सारी सभा ने उठकर'' ''उसे बांधा और ले जाकर पिलातुस हाकिम के हाथ में सौंप दिया'' (लूका 23:1; मत्ती 27:2)।[26]

अफ़सोस, महासभा का उत्तर ''हम उस पर दोष लगाएंगे'' आज भी सुनाई दे रहा है। सभा के सदस्यों की तरह, कुछ लोग इस प्रमाण पर गम्भीरतापूर्ण विचार करने को तैयार नहीं हैं कि यीशु सचमुच परमेश्वर का पुत्र है। वे अपने अविश्वास के कारण उसे गलील के अवर्णित, कम पढ़े-लिखे और घुमक्कड़ प्रचारक के रूप में मानकर उसके जीवन से सम्बन्धित बाइबल के तथ्यों की धज्जियां उड़ाते हैं। किसी ने कहा है कि यदि इस प्रकार का बेरंग चरित्र संसार के इतिहास का रुख बदल सकता है, तो यह बाइबल के उन आश्चर्यकर्मों से भी बड़ा आश्चर्यकर्म होगा, जिन्हें नास्तिक लोग नकारते हैं! मेरी प्रार्थना है कि हम सब

यीशु को परमेश्वर के पुत्र के रूप में स्वीकार करें और हम में से कोई भी यह कहने का दोषी न हो कि ''मैं उस पर दोष लगाऊंगा।''

पिलातुस की दुविधा (मत्ती 27:11-14; मरकुस 15:2-5; लूका 23:1-7; यूहन्ना 18:28-38)

महासभा के प्रतिनिधि यीशु को ''पिलातुस के पास'' ले गए (लूका 23:1)। पुन्तियुस पिलातुस यहूदिया और सामरिया पर उस समय का रोमी राज्यपाल था (लूका 3:1)।[27] राज्यपाल के रूप में उसके मुख्य कर्त्तव्य शांति-व्यवस्था बनाए रखना और रोम के लिए कर एकत्र करना थे। ''लोगों के अपने प्रबन्ध से किसी को दी गई मृत्यु दण्ड की स्वीकृति देना और उसे लागू करना-इस मामले में महासभा की'' उसकी नापसन्द ज़िम्मेदारी भी थी।[28]

अभी दिन चढ़ा ही था[29] जब अगुवे यीशु को यरूशलेम में पिलातुस के मुख्यालय में ले आए,[30] जिसे ''किला'' कहा जाता था (यूहन्ना 18:28क)। इसे लातीनी भाषा से लिए गए यूनानी शब्द में ''प्रिटोरियुम'' लिप्यंतरित किया गया है। इस शब्द का इस्तेमाल विशेष इलाके में रोमी राज्यपाल के आधिकारिक निवास के लिए किया जाता था (देखें प्रेरितों 23:35)। बाइबल से बाहर की परम्परा के अनुसार, यरूशलेम का प्रिटोरियुम मन्दिर के प्रांगण के उत्तर-पश्चिम में एंटोनिया के किले में था।[31] आज कुछ लोगों का मानना है कि पिलातुस नगर के पश्चिम में हेरोदेस महान के महल में रहता होगा,[32] पर अन्य पारम्परिक स्थान को ही प्राथमिकता देते हैं। बास्टियान वैन एलड्रेन ने लिखा है कि ''पिलातुस के मन्दिर के निकट होने की तनावपूर्ण स्थिति, फसह के समय की मुख्य गतिविधि, पिलातुस के यीशु के मुकदमे के लिए एंटोनिया के किले में होने का पक्ष करती है।''[33]

यह प्रिटोरियुम अन्यजातियों का इलाका था; यहूदी पुरोहित ''आप किले के भीतर न गए ताकि अशुद्ध न हों[34] परन्तु फसह खा सकें'' (यूहन्ना 18:28ख)। ''फसह का भोज'' पिछले दिन की शाम को खा लिया गया था (मत्ती 26:17-19; मरकुस 14:12, 14, 16; लूका 22:8, 11, 13, 15), इसलिए ''फसह'' यहां आठ दिन तक चलने वाले पर्व के सम्बन्ध में खाए जाने वाले अन्य भोजनों को कहा गया होगा। कपटी अगुओं ने निर्दोष व्यक्ति को मृत्यु का दण्ड देने में हिचकिचाहट नहीं की, पर उन्होंने ''औपचारिक अशुद्धता'' (यूहन्ना 18:28) का जोखिम नहीं उठाया।

जब पिलातुस को पता चला कि यहूदियों का एक शिष्टमण्डल किसी कैदी को लाया है, तो बाहर निकलकर उनके पास जाकर कहने लगा, ''तुम इस मनुष्य पर किस बात की नालिश करते हो?'' (यूहन्ना 18:29)।[35] यहूदी अगुओं ने पहले कोशिश की कि राज्यपाल उनके कहने पर यीशु को मृत्यु दण्ड दे दे (यूहन्ना 18:30)। यहूदियों के साथ सहयोग करना पिलातुस के हक में था, परन्तु वे कुछ ज्यादा ही मांग रहे थे। मैं पिलातुस को अपना हाथ हिलाते हुए यहूदियों को जाने के लिए कहने की कल्पना कर सकता हूं, ''तुम ही इसे ले जाकर अपनी व्यवस्था के अनुसार उसका न्याय करो'' (यूहन्ना 18:31क)।

अगुओं ने तुरन्त राज्यपाल को बताया कि वे यीशु को क्यों उसके पास लाए हैं: ''हमें

अधिकार नहीं कि किसी का प्राण लें'' (यूहन्ना 18:31ख)। यहूदियों को कुछ विशेष रियायतें मिली हुई थीं, पर ''रोमी सरकार ने जीवन और मृत्यु का अधिकार अपने पास ही रखा था।''[36] यूहन्ना ने ध्यान दिलाया कि इस स्थिति से अपनी मृत्यु के बारे में कही गई यीशु की बात पूरी हो सकी (यूहन्ना 18:32)। यहूदियों द्वारा पसन्द किया जाने वाला मृत्युदण्ड देने का ढंग पथराव करना था (देखें प्रेरितों 7:58), पर रोमी लोग दोषी को क्रूस पर चढ़ाकर मारने को प्राथमिकता देते थे। जब सभा मसीह को पिलातुस के पास ले गई, तो उन्होंने अनजाने में यीशु की भविष्यवाणी को पूरा कर दिया कि वह अन्यजातियों के हाथों क्रूस पर चढ़ाया जाकर मरेगा (यूहन्ना 12:32-34; देखें मत्ती 20:18, 19; मरकुस 10:33, 34)।

''मृत्यु'' शब्द से राज्यपाल का ध्यान खिंचा होगा; यह मृत्यु दण्ड का मामला था। मैं उसे मसीह को गौर से देखने की कल्पना करता हूं। राज्यपाल ने यीशु के बारे में सुन रखा होगा।[39] अपनी सेवकाई के दौरान मसीह यहूदिया में (पिलातुस के इलाके में) दो बार गया था।[38] पांच दिन पहले यरूशलेम में उसका नाटकीय आगमन और उसके बाद यहूदी अधिकारियों के साथ टकराव, निश्चय ही सब लोगों को मालूम होगा। इससे पहली रात, पिलातुस के सैनिकों को यीशु की गिरफ्तारी में सहायता के लिए लगाया गया था। मैं इस अधिकारी के मन में उठने वाले विचारों की कल्पना कर सकता हूं: ''आखिर यह आदमी *है* कौन?''

अगुओं ने पिलातुस के सामने गढ़े गए तीन आरोप पेश कर दिए: ''हम ने इसे लोगों को बहकाते और कैसर को कर देने से मना करते और अपने आप को मसीह राजा कहते हुए सुना है'' (लूका 23:2)। पहली शिकायत तो अस्पष्ट थी, दूसरी झूठी (मत्ती 22:17-21) और तीसरी गुमराह करने वाली थी कि यीशु राजा है (मत्ती 2:2; 21:5; 27:11), पर राजनैतिक अर्थ में नहीं। मसीह ने लगाए गए आरोपों के विरुद्ध अपना बचाव करने का कोई प्रयास नहीं किया, जिससे यह राज्यपाल चकित था (मत्ती 27:12-14; मरकुस 15:4, 5; देखें यशायाह 53:7)।

पिलातुस ने अपने कक्ष में जाकर यीशु को अपने सामने बुलाया (यूहन्ना 18:33क)। राज्यपाल को इस आरोप की चिंता थी कि यीशु ने राजा होने का दावा किया था या नहीं। पिलातुस ने पूछा, ''क्या तू यहूदियों का राजा है?'' (मत्ती 27:11क; देखें यूहन्ना 18:33क)। मसीह ने इसका हां में उत्तर दिया, ''तू आप ही कह रहा है'' (मत्ती 27:11ख; मरकुस 15:2; देखें 1 तीमुथियुस 6:13)।[39]

यीशु ने फिर पिलातुस से एक प्रश्न पूछा: ''क्या तू यह बात अपनी ओर से कहता है या औरों ने मेरे विषय में तुझ से कही?'' (यूहन्ना 18:34)। वह उस हाकिम से आरोप लगाने वाले पर विचार करने के लिए कह रहा होगा।[40] यदि किसी को यह पता होना चाहिए था कि यीशु रोमी शांति के लिए खतरा है या नहीं तो वह राज्यपाल ही था। दूसरी ओर यदि वह आरोप यहूदी अगुओं ने लगाया था, तो यह संदेहास्पद था। महासभा को शायद ही रोमी साम्राज्य की भलाई की चिंता होगी।

पिलातुस ने माना कि यह आरोप यहूदियों की ओर से था और उसने यीशु को यह

बताने के लिए कहा कि उन्होंने यह आरोप क्यों लगाया (यूहन्ना 18:35)। मसीह ने प्रश्न का उत्तर दिया, पर उसे रोमी अधिकारी समझ नहीं पाया। उसने कहा, ''मेरा राज्य इस जगत का नहीं'' (यूहन्ना 18:36क)। मुख्य समस्या यही थी: यीशु ''इस संसार का'' तलवार चलाने वाला राजा, अर्थात राजनैतिक राजा बनकर नहीं आया था, जिसकी यहूदियों को उम्मीद थी, जिस कारण उन्होंने उसे ठुकरा दिया (मत्ती 21:42)।

यीशु ने यह प्रमाण दिया कि उसका राज्य ''इस जगत का नहीं'' है: ''यदि मेरा राज्य इस जगत का होता, तो मेरे सेवक लड़ते, कि मैं यहूदियों के हाथ सौंपा न जाता: परन्तु अब मेरा राज्य यहां का नहीं'' (यूहन्ना 18:36ख)।[41] घबराए हुए, पिलातुस ने अपना प्रश्न दोहराया: ''तो क्या तू राजा है?'' (यूहन्ना 18:37क)। यीशु ने उत्तर दिया, ''तू कहता है, क्योंकि मैं राजा हूं; मैं ने इस लिए जन्म लिया, और इसलिए जगत में आया हूं, कि सत्य पर गवाही दूं, जो कोई सत्य का है, वह मेरा शब्द सुनता है'' (यूहन्ना 18:37ख)।

पिलातुस को यीशु के *प्रवचन* के रूप में न्यायी और आरोपी के बीच बातचीत पर विचार करें: राज्यपाल को गम्भीरतापूर्वक विचार करने की अपील कि वह कौन था, पिलातुस के लिए अपना जीवन बदलकर उद्धार पाने का अवसर था। अफ़सोस, सांसारिक बुद्धि वाले राज्यपाल ने अभी-अभी पूछा था, ''सत्य क्या है?''[42] और यह कहकर वहां से निकल गया (यूहन्ना 18:38क)। फ्रांसिस बेकर ने लिखा है, ''मसखरी में पिलातुस ने कहा, सत्य क्या है? पर उत्तर सुनने के लिए रुका नहीं।''[43]

पिलातुस को यह तो पता नहीं चला, कि यीशु कौन था, पर उसे यह समझ आ गया कि उसने मृत्यु दण्ड के योग्य कोई काम नहीं किया था। बाहर जाकर इस राज्यपाल ने अपना फैसला सुना दिया: ''मैं तो उस में कुछ दोष नहीं पाता'' (यूहन्ना 18:38ख)। यदि पिलातुस को लगा कि उसके निर्णय से यीशु के शत्रु शांत हो जाएंगे, तो उसने उन्हें गलत समझा था। उनकी आवाज़ विद्रोह का आरोप लगाते हुए और ऊंची होती जा रही थी कि ''यह गलील से लेकर यहां तक सारे यहूदियों में उपदेश दे-देकर लोगों को उकसाता है'' (लूका 23:5)।

उनके शोर से पिलातुस दुविधा में पड़ गया। एक ओर तो, उसने यीशु को ''निर्दोष'' घोषित किया था, जिस कारण उसे तुरन्त उसको छोड़ देना आवश्यक था। दूसरी ओर, वह यहूदियों को और क्रोधित नहीं करना चाहता था। यह समझने के लिए कि पिलातुस ने किस प्रकार अपने आप को मुश्किल में फंसाया, कुछ पृष्ठभूमि का पता होना आवश्यक है। राज्यपाल के सबसे महत्वपूर्ण कामों में से एक शांति बनाए रखना था, परन्तु यहूदिया में पिलातुस के प्रबन्ध के लिए झगड़ों, दंगों और खून-खराबे जैसे शब्दों का इस्तेमाल किया गया (देखें लूका 13:1)। एक और बड़ी गड़बड़ होने से उसे रोम में वापस बुलाया जा सकता था। इसलिए पिलातुस के लिए यहूदियों को प्रसन्न रखना हर हाल में राजनैतिक विवशता थी।

पिलातुस पहला आदमी नहीं था, न ही उसने अन्तिम व्यक्ति होना था, जिसे यीशु के बारे में निर्णय लेकर उसमें बने रहना कठिन था। आज बहुत से लोगों को मालूम है कि प्रभु के लिए निर्णय लेना आवश्यक है, परन्तु फिर भी सही काम करने के लिए उनमें साहस की कमी है। वे परिवार या मित्रों या साथ काम करने वालों को अपने विरुद्ध नहीं करना चाहते।

यदि आज एलिय्याह होता तो वह संकोच करने वालों को यही चुनौती देता: ''तुम कब तक दो विचारों में लटके रहोगे? यदि यीशु प्रभु है, तो *उसके पीछे हो लो!* ''(देखें 1 राजा 18:21)। यहूदी अगुओं ने संकेत दिया था कि यीशु ने ''गलील से लेकर'' (लूका 23:5) लोगों को भड़का दिया है। जब पिलातुस ने यह सुना, तो उसे लगा कि उसकी दुविधा का हल मिल गया है: उसने ''पूछा, क्या यह मनुष्य गलीली है? और यह जानकर कि वह हेरोदेस की रियासत का है [देखें लूका 3:1], उसे हेरोदेस के पास भेज दिया, क्योंकि उन दिनों में वह यरूशलेम में था'' (लूका 23:6, 7)। परन्तु जैसा कि हम देखेंगे, पितालुस ने उसकी समस्या हल नहीं की, बल्कि इसे और बढ़ाया। ''मैं यीशु को क्या करूं?'' प्रश्न से भागने का कोई तरीका नहीं है।

सारांश

हम इस पाठ के दूसरे भाग में यीशु के रोमी मुकदमे का अपना अध्ययन पूरा करेंगे, पर हम इस बात से इतना प्रभावित हो गए लगते हैं कि मसीह का सामना करने आए हर व्यक्ति को यह निर्णय लेना पड़ा कि उसके साथ क्या करे। अंत में, मैं आपको भी यह सुझाव देना चाहता हूं कि आप भी कोई निर्णय अवश्य लें। बहुत पहले की बात है, मसीह पिलातुस के सामने खड़ा था और जैसा कि आपने उसके जीवन का अध्ययन किया है, वास्तव में अब वह आपके सामने खड़ा है। *अब* ''मैं यीशु को क्या करूं'' प्रश्न का उत्तर *आपको* देना है।

आप यीशु को क्या करोगे?
प्रश्न आप ही हीहीहीहीसे है!
और आपको उत्तर देना होगा,
क्योंकि कुछ तो करना ही है।

आप यीशु का क्या करोगे?
दिन-रात यही प्रश्न आता है;
छेदे हुए हाथ उठाए,
वह प्रतीक्षा कर रहा है, आपका जवाब क्या है?

आप क्या कहेंगे?
आप क्या कहेंगे?
आपका उत्तर क्या होगा?
आप यीशु को क्या करोगे?
हां, आपका उत्तर क्या होगा?[44]

नोट्स

पतरस द्वारा यीशु के इनकार का विवरण मेरे प्रवचनों का आधार होता है। एक

मतगणना के अनुसार, बाइबल के छात्रों की यह पसंदीदा कहानी है। इस कहानी का एक होमिलिटक ढंग पतरस के कदम नीचे जाने को दिखाना है, जो उसके प्रभु का इनकार करने का कारण बनें; इसकी तुलना उसके वापस आने के लिए आगे को बढ़ते कदमों से की जा सकती है। इस घटना का इस्तेमाल करने का एक और ढंग पतरस के इनकार की तुलना यहूदा के धोखे से करना है। पतरस के मन फिराव (जो उसके उद्धार का कारण बना) की तुलना यहूदा के पछतावे (जो उसकी आत्महत्या का कारण बना) से की जा सकती है।

हमारे इस अध्ययन से कई आयतों का इस्तेमाल टैक्सचुअल प्रवचनों के आधार के रूप में किया जा सकता है: ''शैतान की आग से सेकना'' (मरकुस 14:54; उन परिस्थितियों से दूर रहने से असफल रहना, जो हमें परीक्षा में डालती और हमारी परीक्षा करती हैं); ''आपके बोलने का ढंग आपकी पहचान है'' (मत्ती 26:73; जीभ); ''यीशु संसार में क्यों आया'' (यूहन्ना 18:37; देखें मत्ती 5:17; 9:12, 13; 10:34; मरकुस 10:45; लूका 19:10; यूहन्ना 6:38; 10:10; 12:27, 28, 46, 47); ''सत्य क्या है ?'' (यूहन्ना 18:38; यह इनकार कि सत्य का अस्तित्व है, यद्यपि यीशु ने कहा कि यह है [देखें यूहन्ना 17:17])। पतरस पर पात्र अध्ययन करने का भी यह उपयुक्त स्थान होगा।

टिप्पणियां

[1]इस पाठ के महत्व के कारण, इसे दो भागों में दिया जाएगा। यदि ब्यालीस सप्ताह की समय सारणी बनाए रखना आवश्यक हो, तो आप इन दो भागों को मिलाकर संक्षिप्त कर सकते हैं। यदि समय की कोई मुश्किल नहीं है, तो आप दो अलग-अलग क्लासों में इसे बता सकते हैं। [2]''प्रभु को बेचने'' की बात उस सोच के लिए इस्तेमाल की जाती है, जिसमें यीशु से किसी चीज़ को अधिक महत्व देकर उसे प्रभु और उसकी इच्छा से पहले लाया जाता है। अमेरिका में, हमारे यहां ऐसी ही अभिव्यक्ति है, ''किसी को बेच *खाना,*'' जिसका अर्थ है उसके साथ धोखा करना। [3]पतरस यूहन्ना 18:15-18 में अनाम चेला यूहन्ना को ही माना जाता है। [4]हम में से जो लोग प्रचार करते हैं, उन्होंने अक्सर ध्यान दिया है कि पतरस को ''दूर'' से पीछे-पीछे नहीं जाना चाहिए था। सम्भवतया पतरस को पीछे जाना *ही नहीं* चाहिए था। यीशु ने संकेत दिया था कि उसकी इच्छा अपने चेलों के उसके पकड़ने वालों से दूर रहने की थी (यूहन्ना 18:8)। [5]यूहन्ना 18:15 कहता है कि महायाजक उसे जानता था; आयत 16 संकेत देती है कि घर के लोग भी उसे जानते थे। यूहन्ना शायद कारोबार के कारण घर वालों का परिचित था। (कालांतर में वह उन्हें ताज़ा मछली सप्लाई करता होगा।) प्रेरितों 4:5-7, 13 से यह भी संकेत मिल सकता है कि कायफ़ा को यूहन्ना की पृष्ठभूमि के बारे में थोड़ा-बहुत पहले से ही पता था। [6]जब पतरस आंगन में आग सेंकने के लिए गया तो यूहन्ना को क्या हुआ ? शायद क्योंकि यूहन्ना घर के लोगों को जानता था, इसलिए उसे घर में जाने दिया गया। एक और सम्भावना यह है कि वह खतरा देखकर भाग गया हो। [7]यूहन्ना 18:25 कहता है कि पतरस ''*खड़ा हुआ* आग ताप रहा था।'' वह सम्भवतया कुछ देर खड़ा रहा और कुछ समय बैठा था। [8]मरकुस के अनुसार, यीशु ने कहा, ''मुर्ग़ के *दो बार* बांग देने से पहले'' (मरकुस 14:30)। इसमें कोई विरोधाभास नहीं है: सुसमाचार के दूसरे वृत्तांतों का मुर्गे का बांग देना स्पष्टया दूसरे मुर्गे का बांग देना था। [9]हमें पूरा-पूरा पता नहीं है कि इनकार कितने समय बाद हुआ। अगला विवरण कहानी को क्रमबद्ध करने का एक ढंग है। सुसमाचार के सभी वृत्तांत तीनों इनकारों के बारे में बताते हैं, पर सभी वृत्तांत उन्हीं इनकारों के बारे में नहीं बताते। सम्भवतया, कई इनकार इतनी जल्दी-जल्दी हुए कि उन्हें एक ही

इनकार माना जा सकता है। [10]सम्भवतया यह छत के लटक रहे छज्जों को कहा गया है।

[11]मरकुस 14:68 के अन्त में, बाद की कुछ हस्तलिपियों में ''और मुर्ग़ ने बांग दे दी'' शामिल किया गया है। पतरस की परीक्षा के बीच में कहीं, मुर्ग़ ने पहली बार बांग दे दी (देखें मरकुस 14:72)। [12]यह ''शपथ'' सम्भवतया वह नहीं है, जिसे हम गाली कहते हैं, बल्कि यहूदियों द्वारा इस्तेमाल की जाने वाली औपचारिक शपथ थी। उसने कसम खाई कि वह सच बोल रहा था। [13]शैतान उसे ''छानता'' रहा। [14]मरकुस ने ''तब तुरन्त *दूसरी बार* मुर्ग़ ने बांग दी'' लिखा है (मरकुस 14:72क)। [15]मरकुस 14:72ख में है, ''मुर्ग के *दो बार* बांग देने।...'' [16]प्रभु का इनकार करने के सम्बन्ध में, देखें मत्ती 10:33 और 2 तीमुथियुस 2:12. [17]पृष्ठ 131 पर यीशु की परीक्षाओं पर ''आपका निर्णय क्या है?'' प्रवचन देखें। [18]सभा का कक्ष स्पष्टतया महायाजक के घर से कुछ दूरी पर था, क्योंकि यीशु को रात के सत्र के बाद वहीं ले जाया जाना था। परन्तु इस कक्ष की सही-सही स्थिति कि वह कहां पर था, पर असहमति पाई जाती है। कालांतर में अधिकतर लोगों का विचार था कि यह मन्दिर के प्रांगण में, स्त्रियों के आंगन से दूर नहीं था, परन्तु अब कुछ लोगों का विश्वास है कि यह मन्दिर के क्षेत्र से बाहर था। [19]मरकुस ने लिखा है कि ''सारी महासभा'' वहां थी (मरकुस 15:1), जिसमें निकुदेमुस और अरमितिया का यूसुफ भी होना चाहिए था। (यूहन्ना 7:50; लूका 23:50, 51)। यदि ये दोनों वहां थे, तो क्या उन्हें विरोध करने का अवसर मिला या सारा मामला इतनी जल्दी निपटाया गया कि उन्हें बोलने का अवसर ही नहीं मिला? हमें बताया नहीं गया। [20]उसने पूछा हो सकता है कि पुराना नियम मसीहा के बारे में क्या कहता है तथा उसके जीवन और सेवकाई से वे भविष्यवाणियां कैसे पूरी होनी थीं। परन्तु उसे पता था कि वे उसे उत्तर देने से इनकार कर देंगे (देखें मत्ती 22:41-46क)।

[21]पृष्ठ 85 पर ''यहूदिया में निद्रारहित'' पाठ में मत्ती 26:64 पर नोट्स देखें। [22]हां की पुष्टि करने के लिए एक इब्रानी अभिव्यक्ति। [23]सभा के सदस्य गम्भीर थे, पर उनकी बात में कुछ मज़ाक लगता है: उनके पास कोई गवाह *नहीं* थे। यदि यीशु पुष्टि न करता, तो उस सुबह उनके पास कोई गवाह *नहीं* होना था। [24]यद्यपि कहानी में यहां पर उल्लेख नहीं है, परन्तु सभा के सामने मुख्य काम राजनैतिक आरोप तैयार करना ही होगा। उनके लिए यीशु को पिलातुस के सामने ले जाने के लिए यह आवश्यक होगा। [25]बाद में उन्होंने *अवैधानिक रूप से* स्तिफनुस को पथराव करके मार डाला (प्रेरितों 6:8-7:60); परन्तु, यीशु के मामले में, वे कानून का *दिखावा* करना चाहते थे। [26]कुछ समन्वयों में यहूदा की आत्महत्या को महासभा द्वारा की गई औपचारिक पुष्टि के तुरन्त बाद शामिल किया गया है, क्योंकि मत्ती ने इसे वहीं पर लिखा है (मत्ती 27:3-10)। परन्तु कहानी के कुछ विवरणों से संकेत मिलता है कि यह बाद में हुआ होगा। उदाहरण के लिए, महासभा प्रिटोरियुम में पिलातुस से बहस करने के बजाय मन्दिर में वापस लौट गई (आयत 5)। इसलिए मेरे समन्वय में, कहानी को पिलातुस द्वारा यीशु को मृत्यु दण्ड देने के बाद रखा गया है। [27]पृष्ठ 161 पर ''पुन्तियुस पिलातुस (और यीशु की मृत्यु)'' पाठ देखें। [28]एफ़ लेगर्ड स्मिथ, *ए नैरेटेड बाइबल इन क्रोनोलॉजिकल ऑर्डर* (यूजीन, ऑरिगन: हार्वेट हाउस पब्लिशर्स, 1984),1470. [29]कुछ समय बाद, यीशु के दो बार पिलातुस तथा एक बार हेरोदेस के सामने जाने के बाद, यूहन्ना ने कहा कि यह लगभग 6 बजे प्रात: का समय था (पृष्ठ 119 से आरम्भ होने वाले ''एक प्रश्न जिसका उत्तर सब को देना आवश्यक है'' पाठ में यूहन्ना 19:14 पर नोट्स देखें)। महासभा ने दिन चढ़ने से पहले यीशु को पिलातुस के पास ले जाने में जल्दी की होगी, [30]रोमी राज्यपाल का पलश्तीनी मुख्यालय कैसरिया में था (देखें प्रेरितों 23:33), परन्तु पिलातुस यरूशलेम में यहूदी फसह के समय उपद्रवी यहूदियों पर नज़र रखने के लिए आया था।

[31]पृष्ठ 180 पर ''यरूशलेम नगर (यीशु के अंतिम घण्टों के सुझाए गए मार्गों के साथ)'' का मानचित्र देखें। इसके अलावा, परम्परागत ''दुख का मार्ग'' (वाया डोलोरोसा) यहीं से आरम्भ होता है। किले पर टिप्पणी करते हुए, जोसेफस ने कहा है कि ''अपनी भव्यता से, यह एक महल लगता था'' (जोसेफस *वार्स ऑफ़ द ज्यूस* 5.5.8)। [32]पिलातुस के निवास स्थान से सम्बन्धित प्रश्न की चर्चा जॉन मैकरे, *आरकियोलॉजी एण्ड द न्यू टैस्टामेंट* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1991), 114-19 में की गई है। [33]बी. वैनएल्डरन, ''प्रिटोरियुम,'' *इंटर स्टैंडर्ड बाइबल इन्साक्लोपीडिया,* संशोधित, सामान्य संस्करण ज्योफरी डब्ल्यू. ब्रोमिले (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1986), 3:929. इसके

अलावा, यह भी विचार करें कि यहूदी पर्वों के दौरान, कैसरिया से अतिरिक्त सिपाही लाए जाते थे। इन्हें मन्दिर के क्षेत्र में गड़बड़ी से निपटने के लिए तैयार रहने के लिए एंटोनिया के किले में ठहराया जाता होगा (देखें प्रेरितों 23:31-35)। मत्ती 27:27 के अनुसार, रोमियों की ''सारी पलटन'' किले में थी। इससे यह संकेत मिल सकता है कि एंटोनिया का किला प्रिटोरियुम ही को कहा गया था।[34]अन्य जाति के घर में अशुद्ध होने के सम्बन्ध में, देखें प्रेरितों 10:28. कई यहूदी अपने आप को शुद्ध करने के लिए यरूशलेम में एक सप्ताह पहले आ गए थे (यूहन्ना 11:55) ताकि वे पर्व में भाग ले सकें। यहूदी अगुवे यह नहीं लगने देना चाहते थे कि वे ''साधारण'' यहूदियों से कम विवेकी हैं।[35]यीशु के रोमी मुकदमे के दौरान हुई घटनाओं के सही-सही क्रम के बारे में हम नहीं जान सकते। दिया गया क्रम एक सम्भावित प्रबन्ध है।[36]ब्रूस कोरली, ''ट्रायल ऑफ़ जीज़स,'' *डिक्शनरी ऑफ़ जीज़स एण्ड द गॉस्पल्स,* सम्पादक जोयल बी. ग्रीन और स्कौट मैर्सनाइट (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोइस, इंटरवर्सिटी प्रैस, 1992), 850 में उद्धृत थियोडोर मोमसैन। यूहन्ना 18:31ख की बात एक अपवाद हो सकती है यदि कोई गैर यहूदी मन्दिर के पवित्र भाग में गया हो।[37]पिलातुस की पत्नी के शब्दों (मत्ती 27:19) से यीशु के बारे में पहले से कुछ जानकारी का संकेत मिलता है; यदि उसकी पत्नी ने यीशु के बारे में सुना था, तो निश्चय ही पिलातुस ने भी सुना था।[38]इस पुस्तक में पृष्ठ 7 पर दिए गए समन्वय को देखें। गलील में यीशु की सफलता से हेरोदेस का ध्यान उस पर पड़ गया था (मत्ती 14:1; लूका 9:7-9); यहूदिया में यीशु की सफलता ने पिलातुस का ध्यान खींचा होगा।[39]कुछ लोगों का मानना है कि यीशु कह रहा था, ''तेरे ही शब्द हैं, मेरे नहीं,'' परन्तु उसका उत्तर ''हां'' के अर्थ वाला यहूदी ढंग था (टिप्पणी 22 देखें)।[40]यूहन्ना 18:34 में यीशु के प्रश्न की कई व्याख्याएं होती हैं। दी गई एक व्याख्या अधिक मान्य है।

[41]यीशु की बात कि उसका राज्य ''यहां [या ''संसार''] का नहीं'' यह सिखाने वालों के लिए कि यीशु पृथ्वी पर एक राज्य स्थापित करने के लिए आएगा, स्रोत है। वे इस स्पष्ट बात की व्याख्या करने के लिए दूर तक जाने की कोशिश करते हैं।[42]पिलातुस का प्रश्न ''गम्भीरता से की गई पूछताछ ... उससे पूछताछ जो निराश था ..., हंसी उड़ाने वाला प्रश्न माना गया है।'' (जे. डब्ल्यू. मैक्गर्वे एण्ड फिलिप वाई. पैंडलटन, द *फ़ोरफ़ोल्ड गॉस्पल ऑर ए हारमनी ऑफ़ द फ़ोर गॉस्पल्स* [सिंसिनटी: स्टैंडर्ड पब्लिशिंग कं., 1914], 707)। प्रश्न पूछने की पिलातुस की मंशा *जो भी रही हो, पर वह उससे जो उत्तर देने के योग्य था, उत्तर सुनने के लिए रुका नहीं* (देखें यूहन्ना 17:17)।[43]*बार्टलैट'स फैमिलियर कुटेशन्स, एक्सपैंडिड मल्टीमीडिया एडीशन* (टाइम वारनर इलैक्ट्रॉनिक पब्लिशिंग, 1995) में उद्धृत फ्रांसिस बेकन, ''ऐस्सेज़ [1625], ऑफ़ ट्रुथ।''[44]जॉन रोबिंसन, ''वट शैल इट बी ?'' *सॉन्स ऑफ़ फेथ एण्ड प्रेज़,* संकलन व सम्पादन आल्टन एच. हॉवर्ड (वैस्ट मोनरो, लुईसियाना: हावर्ड पब्लिशिंग कं., 1994)।